अध्याय

08

कन्यादान-ऋतुराज।

© JCERT not to be republished

ऋतुराज

कवि – परिचय

1. **ऋतुराज का जन्म 10 फरवरी 1940 को भरतपुर राजस्थान में हुआ था।**
2. **राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से उन्होंने अंग्रेजी से एम ए किया। तत्पश्चात राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य करते रहे।**
3. **कृतियाँ-मैं आंगिरस, पुलपर पानी, नहीं प्रबोध चंद्रोदय, सूरत निरत, लीला मुखारविंद, एक मरणधर्मा और अन्य, कितना थोड़ा वक्त, अबेकस, आशा नाम नदी (काव्य -संग्रह)। कविता की बात(संपादन)**
4. **सम्मान एवं पुरस्कार-पहल सम्मान, बिहारी सम्मान, सुब्रमण्यम भारती हिंदी सेवी सम्मान, मीरा पुरस्कार आदि।**
5. **ऋतुराज राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष रहे हैं।**
6. **मूल रूप से समाज में हाशिये पर खड़े व्यक्ति की चिंताओं को इन्होंने काव्य लेखन का विषय बनाया है। शोषित, पीड़ित, उपेक्षित और वंचित लोगों के प्रति समान रूप से संवेदना प्रकट की है।**
7. **ऋतुराज की भाषा सहज,सरल और बोलचाल की भाषा है। उनके काव्य में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों का सारगर्भित प्रयोग है। मूल रूप से आम जन-संवेदना के कवि हैं।**

पाठ परिचय।

1. कवि ऋतुराज ने 'कन्यादान' कविता के माध्यम से विवाह के बाद स्त्री जीवन में आनेवाली चुनौतियों को प्रकट किया है।
2. कविता में विवाह के बाद विदाई के समय एक माँ अपनी बेटी को अपने जीवन से जुड़े सभी अच्छे-बुरे अनुभवों को साझा करती है।
3. माँ अपनी बेटी को स्त्री के परम्परागत आदर्शों के साथ-साथ हिंसा, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा देती है।
4. माँ कहती है कि कभी भी अपने सौंदर्य का घमंड मत करना क्योंकि सौंदर्य समय के साथ समाप्त हो जाता है।यानी कि व्यवहारों में मधुरता लाने का प्रयास करना।
5. किसी भी परिस्थिति में आग का प्रयोग अपने नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं करना यानी कि हर परिस्थिति का डट कर मुकाबला करना।
6. स्त्री को अपने आभूषणों के प्रति विशेष प्रेम होता है। अतः माँ कहती है कि ये सब स्त्री जीवन के पैरों की बेड़ियां हैं। इसलिए जितना हो सके उससे ऊपर उठने का प्रयास करना यानी मोह को त्यागना।
7. अंतिम में माँ कहती है कि लड़कियों में जो परंपरागत गुण मर्यादा, लज्जा, शिष्टता, विनम्रता आदि हैं। इसको

© JCERT not to be republished

सदैव अपने अंदर बरकरार रखना लेकिन कभी भी इसे अपनी कमजोरी मत बनने देना। यानी कि हर प्रकार के अत्याचार, अन्याय और शोषण का डटकर मुकाबला करना।

काव्यांश-1

कितना प्रामाणिक था उसका दुख

लड़की को दान में देते वक्त

जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।

शब्दार्थ-

प्रामाणिक-	वास्तविक /सच्चा।
पूँजी-	धन।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 2' के 'कन्यादान' कविता से लिया गया है। इसके कवि ऋतुराज हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में बेटी को ससुराल विदा करते हुए एक माँ की मनःस्थिति का वर्णन है।

व्याख्या- उपरोक्त पंक्तियों में बेटी को विदा करते हुए माँ का जो स्वाभाविक दुःख होता है उसका वर्णन है। बेटियां सदैव माँ के निकट और उसके सुख दुःख को समझने वाली होती हैं। वह हर परेशानी में माँ का हाथ बटा कर उसका साथ देती हैं। अब जब वही बेटी माँ से दूर जा रही है तो उसे ऐसा लगता है कि जैसे वर्षों से संचित निधि उससे कहीं दूर जा रही है।

विशेष-

1. अंतिम पूँजी' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
2. विवाह के उपरांत की स्थिति का भावनात्मक चित्रण है।
3. भाषा सहज,सरल और भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।

काव्यांश-2

लड़की अभी सयानी नहीं थी

अभी इतनी भोली सरल थी

की उसे सुख का आभास तो होता था

लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता था

पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की

कुछ तुकों कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

शब्दार्थ-

सयानी -	समझदार।
बाँचना -	पढना।
धुंधले -	अस्पष्ट।
आभास -	अनुभव, महसूस।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 2' के 'कन्यादान' कविता से लिया गया है। इसके कवि ऋतुराज हैं। प्रस्तुत

© JCERT not to be republished

पंक्तियों में कवि उस माँ की चिंता का वर्णन करते हैं जो अब ससुराल में जा कर रहेगी।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि बच्ची अभी भोली -भाली, सीधी है।अभी कच्चे उम्र की है। उसने मायके में केवल सुख का उपभोग किया है, दुःख के बारे में तो उसे पता ही नहीं है और न ही उसे अपने दुखों और परेशानियों को हल करना आता है। अभी तो उसके सामने काल्पनिक सुखों का विस्तृत फलक है।उसे दुनियादारी का कुछ भी पता नहीं है। आगामी जीवन में ससुराल में आनेवाली समस्याओं एवं संघर्षों का उसे तनिक भी भान नहीं है।

विशेष-

1. बेटी के आगामी भविष्य की चिंता में माँ की व्याकुल मनोदशा का चित्रण।
2. भाषा सहज,सरल एवं बोधगम्य।
3. प्रतीकों का सुन्दर संयोजन।

काव्यांश-3

माँ ने कहा पानी में झाँककर

अपने चेहरे पर मत रीझना

आग रोटियाँ सेंकने के लिए है

जलने के लिए नहीं

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह

बंधन है स्त्री जीवन के

शब्दार्थ-

रीझना -	मन ही मन प्रसन्न होना।
शाब्दिक -	शब्दों के।
भ्रम -	धोखा होना।
आभूषण -	गहना।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 2' के 'कन्यादान' कविता से लिया गया है।इसके कवि ऋतुराज हैं।माँ अपनी बेटी को आगामी भविष्य को बेहतर बनाने के लिए अपने अनुभवों को साझा कर रही हैं।

व्याख्या- माँ अपनी बेटी को समझाते हुए कहती हैं कि पानी या शीशे में अपनी सुन्दरता पर अत्यधिक खुश मत होना। क्योकि रूप-सौन्दर्य क्षणिक है, अपने गुणों के द्वारा सबका मन मोहना। फिर माँ बेटी से कहती हैं कि आग का प्रयोग केवल भोजन बनाने के लिए होता है और यदि कोई इसका प्रयोग तुम्हारा शोषण करने या जलने के लिए करे तो तुम डटकर उसका प्रतिकार करना। कवि इस प्रसंग के माध्यम से उन लोगों पर कटाक्ष करता है जो दहेज़ के लालच में स्त्री को जिन्दा जला देते हैं। माँ वस्त्र और आभूषण को सौन्दर्यवर्धक न मानकर उसे महिलाओं के पैरों की जंजीर मानती है। वह कहती है कि कभी भी लालच के वशीभूत होकर अपने आत्मसम्मान से समझौता मत करना।

विशेष-

1. नारी को सामाजिक बन्धनों से मुक्त रखने की प्रेरणा है।
2. वाक्य रचना सरल है।
3. मुक्त छंद का प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश–4

माँ ने कहा लड़की होना

पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग' 2 के 'कन्यादान' 'कविता से लिया गया है। इसके कवि ऋतुराज हैं। उपरोक्त पंक्तियों में माँ के द्वारा स्त्री के सशक्त रूप को उभारा गया है।

व्याख्या– माँ कहती है कि स्त्रियों के प्रति जो समाज की परम्परागत विचारधारा है कि लड़की अबला है, कमजोर है तथा वह पुरुष के संरक्षण के बिना कुछ नहीं कर सकती। इन तर्कों से ऊपर उठकर तुम्हें एक मजबूत, सशक्त, तटस्थ और जिम्मेवार महिला बनकर अपने कर्तव्यों का निर्वाध गति से निर्वहन करना है। यानि की जब भी शोषण, अन्याय या अत्याचार की परिस्थिति उत्पन्न हो डटकर उसका प्रतिरोध करना।

विशेष–

1. इन पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।
2. अन्याय के विरूद्ध प्रतिकार का शब्द है।
3. बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ?

उत्तर:-क्योंकि लोगोंको यही लगता है कि स्त्री कोमल,सरल,निश्छल है और उस पर चाहे कितने भी अत्याचार कर लो वह परिवार की खोखली मर्यादा के कारण तमाम दुखों को सहते हुए प्रतिकार नहीं करेगी।माँ इन सब बद्धमूल धारणाओं से अपनी बेटी को ऊपर उठने की सीख देती है।भावी जीवन में आनेवाली समस्या का डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहती है कि लड़कियों की तरह कोमल जरूर रहना लेकिन इस कोमलता के आधार पर होने वाले अत्याचार और अन्याय का डटकर मुकाबला करना।

प्रश्न 2. (क)'आग रोटियां सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं'

इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर:-हमारे समाज में स्त्रियों को कमजोर समझा जाता है।कभी दहेज के नाम पर तो कभी घरेलू हिंसा के नाम पर स्त्रियों को आग के हवाले कर दिया जाता है।कभी कभी महिलाएं स्वयं ही इस शोषण से मुक्ति पाने के लिए आत्मदाह कर लेती हैं।

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?

उत्तर:-माँ ने बेटी को सचेत करना जरूरी इसलिए समझ क्योंकि वह अभी भोली-भाली

© JCERT not to be republished

है, नादान है। उसे यथार्थ की पथरीली जमीन पर चलने का अनुभव नहीं है। इसलिए वह अपनी बेटी को समझाती है कि जीवन में कभी भी चुनौतियों से हारकर आत्मसमर्पण मत करना (अपने आप को आग के हवाले मत करना) अपितु विपरीत परिस्थितियों को भी अपनी सूझ-बूझ से अपने अनुकूल बना लेना।

प्रश्न 3. 'पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की'

इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि उभर कर आ रही है उसे शब्दबद्ध कीजिये।

उत्तर:-इसे पढ़कर हमारे मन में निम्न प्रकार की छवि उभरती है की बच्ची अभी कम उम्र की है।भोली-भाली है।वह अपने विवाह के सुखद स्वप्नों में खोई हुई है।उसे भविष्य में आने वाली कठिनाइयों और परेशानियों का कोई अंदेशा नहीं है।उसने केवल सुख के दिन देखे हैं।ससुराल के जीवन तथा वहां आने वाली चुनौतियों से वह पूर्णतः अनभिज्ञ है।

प्रश्न 4. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी'क्यों लग रही थी?

उत्तर:-क्योंकि बेटियों को अपनी माँ से बहुत ही ज्यादा लगाव होता है।वह अपना सारा दुःख-सुख अपनी माँ के साथ साझा करती है और माँ भी अपनी बेटी के साथ सहेली की तरह रहती है। ऐसी परिस्थिति में एकाएक बेटी का विछोह माँ को दुखी कर देता है और उसे लगता है कि वर्षों से संचित अमूल्य धरोहर किसी और के पास जा रही है। यही कारण है कि माँ को बेटी अपनी 'अंतिम पूँजी'कहती है।

प्रश्न 5. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

उत्तर:-माँ सर्वप्रथम बेटी को सुंदरता पर घमण्ड न करने की सीख देते हुए कहती है कि रूप-रंग क्षणिक है।गुणों के द्वारा किसी की परख होती है,सुंदरता से नहीं। आग का उपयोग भोजन के अतिरिक्त अपने आप को मिटाने के लिए मत करना। यानी कि हर विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला साहस के साथ करना। वस्त्र आभूषणों के प्रति ज्यादा मोह मत करना क्योंकि ये स्त्री जीवन के पैरों की बेड़ियां हैं।नारीसुलभ गुणों को बनाये रखना पर उसको अपनी कमजोरी मत बनने देना।

© JCERT not to be republished